चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	27.5.21	2	7-8

HAU ADOPTS SIX VILLAGES

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has adopted six villages in Hisar district, for which approved Corona medicine kits will be distributed. Vice-Chancellor Prof BR Kamboj handed over the medicine kit to Dr Ratna Bharti, Civil Surgeon, Hisar. He said the villages adopted in the first phase include Balsamand, Talwandi Rukka, Mangali, Agroha, Gawad and Mohabbatpur. He further said in six villages of the adopted district, kits of approved medicines have been handed over to the Civil Surgeon for the distribution through the PHC and social organisation. The Civil Surgeon appreciated the initiative of the university administration and said this type of cooperation would continue in future.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	27.5.21	9	2-6

वेबिनार हकृवि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर वेबिनार आयोजित

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई : प्रो. काम्बोज

लगातार धान का रकबा बढ़ने से प्रदेश में गिरा पानी का स्तर, धान के लिए पानी की ज्यादा जरूरत

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रहीं है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। वे विवि में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या व समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

वेबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज एवं मौजूद अन्य। फोटो : हरिभूमि

धान की सीधी बिजाई से पानी की बचतः हरियाणा व उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

विस्तृत जानकारी दी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, मारी व मध्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

इन्होंने भी धान की सीधी बिजाई को लेकर रखे अपने विचार

इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्रा, डॉ. राजवीर डूपसह, डॉ. एस.के. सिंह ने भी वेबिनार में अपने विचार रखे। पैनल डिस्कशन में डॉ. सतबीर सिंह पूनियां, डॉ. धर्मबीर यादव, राजबीर गर्ग व डॉ. जसवीर सिंह शामिल हुए। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डॉ. टोडरमल व डॉ. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डॉ. वी.एस. हुड्डा और डॉ. संदीप रावल थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.5.21	2	1-4

पारंपरिक विधि की तुलना में धान की सीधी बिजाई से 20% से अधिक बचा सकते हैं पानी

हकृवि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर वेबिनार का आयोजन

भास्कर न्यूज | हिसार

वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है।

हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधिकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती

की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वे विवि में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन एचएयू व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोपित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कीटों और रोगों (जैसे फुट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है।

इन्होंने भी सीधी बिजाई को लेकर रखे अपने विचार

इस वेबिनार में विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्रा, डॉ. राजवीर सिंह, डॉ. एस.के. सिंह ने भी विचार रखे। पैनल डिस्कशन में डॉ. सतबीर सिंह पूनियां, डॉ. धर्मबीर यादव, राजबीर गर्ग व डॉ. जसवीर सिंह शामिल हुए। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डॉ. टोडरमल व डॉ. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डॉ. वी.एस. हुड्डा और डॉ. संदीप रावल थे। वेबिनार में विश्वविद्यालय के अलावा विभिन्न संस्थानों से वैज्ञानिक, विद्यार्थी और देशभर से किसान शामिल हुए। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर मुख्य वक्ता थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	27.5.21	2	7-8

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई

माई सिटी रिपोर्टर

हकृवि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में हुआ वेबिनार

हिसार। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है। 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की आशंका है। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है। धान की सीधी बिजाई पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोपित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कीटों और रोगों (जैसे फुट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियान के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एमएस भुल्लर मुख्य वक्ता थे। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने मेरा पानी मेरी विरासत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए किसानों का आह्वान किया। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने सभी का स्वागत किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27.5.21	3	2-5

धान की सीधी बिजाई से होगी जल की बचत

जागरण संवाददाता, हिसार : वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 फीसद की कमी आई है और 2050 तक यह 77 फीसद तक घटने की संभावना है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज बताते हैं कि देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 फीसद से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 फीसद तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। कुलपति विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर की तरफ से किया गया।

धान की सीधी बिजाई कैसे होगी फायदेमंद

हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परंपरागत तरीके से खेती की जा रही है। जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है।

मेरा-पानी, मेरी विरासत की दी जानकारी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एमएस भुल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, भारी व मध्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी।

इन्होंने भी धान की सीधी बिजाई को लेकर रखे अपने विचार

डा. एसके सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डा. जेएस मिश्रा, डा. राजवीर सिंह, डा. एसके सिंह ने भी वेबिनार में अपने विचार रखे। पैनल डिस्कशन में डा. सतबीर सिंह पूनिया, डा. धर्मबीर यादव, राजबीर गर्ग व डा. जसवीर सिंह शामिल हुए। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एस.के. ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डा. टोडरमल व डा. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डा. वीएस हुड्डा और डा. संदीप रावल थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	27.5.21	5	3-4

मैसी विवि और एचएयू की ऑनलाइन मीटिंग

शोध कार्य में सहयोग करेंगे दोनों विश्वविद्यालय

हिसार, 26 मई (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (सीसीएसएचएयू) और मैसी विश्वविद्यालय, न्यूजीलैंड संयुक्त रूप से कृषि अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करेंगे। दोनों विश्वविद्यालयों के अधिकारियों की एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से शोध कार्य में एक-दूसरे का सहयोग करेंगे। दोनों विश्वविद्यालय संयुक्त डिग्री और डिप्लोमा कोर्सों को बढ़ावा देंगे। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी और बताया कि दोनों विश्वविद्यालयों में इस बारे में पहले ही एमओयू साइन हो चुका है। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. अतुल ढींगड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के बीज विज्ञान एवं तकनीकी विभाग में स्पार्क के तहत मैसी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एक प्रोजेक्ट चल रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	27.5.21	—	—

हकृवि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर राष्ट्रीय वैबिनार का आयोजन

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 मई (देवानंद) : वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

हिसार : वेबिनार के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज एवं मौजूद अन्य।

मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की पारम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, भारी व मध्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी। पैनल डिस्कशन में डॉ. सतबीर सिंह पूनियां, डॉ. धर्मबीर यादव, राजबीर गर्ग व डॉ. जसबीर सिंह शामिल हुए। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डॉ. टोडरमल व डॉ. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डॉ. वी.एस. हुड्डा और डॉ. संदीप रावल थे। वेबिनार में विश्वविद्यालय के अलावा विभिन्न संस्थानों से वैज्ञानिक, विद्यार्थी और देशभर से किसान शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जागरण	26.05.21	—	—

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हकृवि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

हिसार : वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के

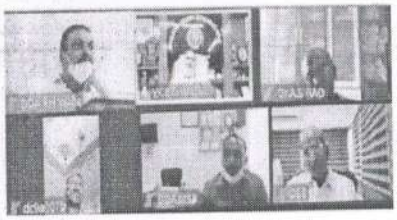

प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई- अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोपित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कीटों और रोगों (जैसे फुट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	26.05.21	—	—

समस्त हरियाणा — बुधवार, 26 मई, 2021

देश की सबसे महत्वपूर्ण फसल है चावल : प्रो. कांबोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं।

धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित

होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई- अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

मेरा-पानी मेरी विरासत की दी जानकारी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियान के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, भारी व मध्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही मेरा पानी मेरी विरासत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए किसानों का आह्वान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	26.05.21	—	—

कार्यक्रम | हकृवि में धान की सीधी बिजाई विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाईः प्रो. बी.आर. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार।
वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 72 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई- अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के

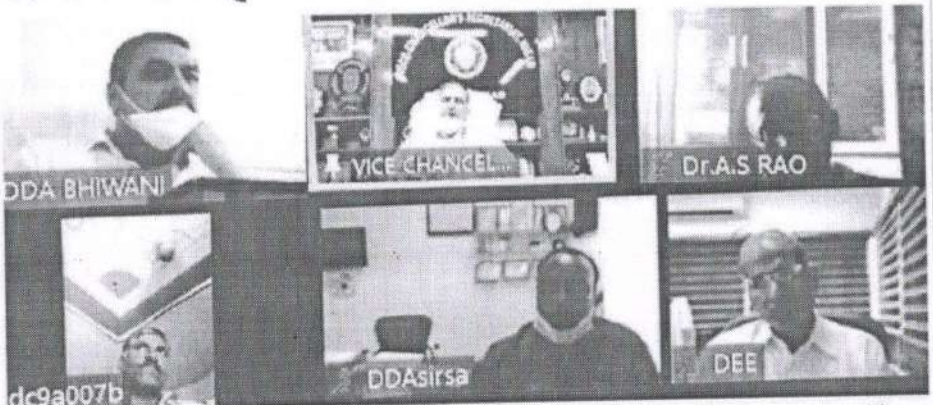

प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर ने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, भारी व मध्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही मेरा पानी मेरी विरासत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए किसानों का आह्वान किया।

इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. महरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्रा, डॉ. राजबीर सिंह, डॉ. एस.के. सिंह ने भी वेबिनार में अपने विचार रखे। पैनल डिस्कशन में डॉ. सतबीर सिंह पूनिया, डॉ. धर्मबीर यादव, राजबीर गर्ग व डॉ. जसबीर सिंह शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	26.05.21	—	—

हकृवि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई : प्रो. काम्बोज

पांच बजे ब्यूज

हिसार। वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह

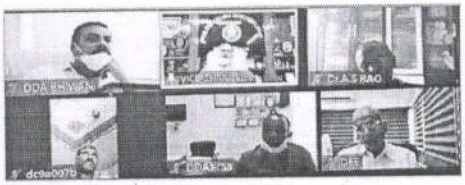

पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। ये विचार हकृवि के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई- अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च में चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई मे श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोपित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कीटों और रोगों (जैसे फुट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है।

पेरा-पानी मेरी विरासत की दी जानकारी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एमएस भुल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन को तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, भारी व माध्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही मेरा पानी मेरी विरासत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए किसानों का आह्वान किया।

वेबिनार में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डॉ. जेएस मिश्रा, डॉ. राजबीर सिंह, डॉ. एसके सिंह ने भी वेबिनार में अपने विचार रखे। पैनल डिस्कशन में डॉ. सतबीर सिंह पूनिया, डॉ. धर्मबीर यादव, राजबीर गर्ग व डॉ. जसबीर सिंह शामिल हुए। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डॉ. ठोडरमल व डॉ. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डॉ. वीएस हुड्डा और डॉ. संदीप रावत थे। वेबिनार में विश्वविद्यालय के अलावा विभिन्न संस्थानों से वैज्ञानिक, विद्यार्थी और देशभर से किसान शामिल हुए।

13

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.5.21	4	1-5

भास्कर खास • इस विधि से जड़ों में सूत्र कर्मी रूपी कीटाणुओं के अंडे अधिक तापमान से मर जाते हैं

किसान जून-जुलाई में फसल की जड़ों को सूत्र कर्मी रोग से बचाने के लिए अपनाएं भूमि सौर तपीकरण विधिः डॉ. अरोड़ा

प्राकृतिक विधि द्वारा इस रोग की रोकथाम 80 से 90% की जा सकती है

राकेश कुमार | गढ़ी बीरबल

हरियाणा में सब्जियों का खुले खेतों में या मच्छरदानी, पॉली हाउस एवं प्लास्टिक की सुरंग में भूमि का सूर्य की तेज किरणों से उपचार करना जून और जुलाई के महीने में बहुत आवश्यक है।

ऐसे में किसान ध्यान रखें कि वह जून और जुलाई के महीनों के इन 60 दिनों में भूमि में विशेषकर सब्जियों की संरक्षित खेती करने वाले किसानों को भूमि का सौर तपीकरण करना (सोयल सोलर स्टरलाइजेशन) इस विधि के अपनाने से जड़ों में सूत्र कर्मी रूपी कीटाणुओं के अंडे अधिक तापमान पर मर जाते हैं और किसी भी प्रकार की महंगे रसायन का प्रयोग ना करके प्राकृतिक विधि द्वारा इस रोग की रोकथाम 80 से 90 प्रतिशत की जा सकती है।

इन दो महीनों के दौरान किसानों को इस विधि को अपनाना बेहद जरूरी है जो की भूमि को रोग रहित करने में कारगर सिद्ध हुई है। इसको अपनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देना बेहद आवश्यक है जिनके बारे में पूर्व प्रोफेसर सुरेश कुमार अरोड़ा पूर्व अध्यक्ष सब्जी विज्ञान विभाग हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने बताया कि यह महत्वपूर्ण बिंदु क्या हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु • भूमि को पारदर्शी पॉलीथिन के साथ ढंके

पूर्व प्रोफेसर सुरेश कुमार अरोड़ा

1. जनवरी से मई की फसल के अवशेषों को प्लास्टिक के संयंत्र या मच्छरदानी से हटा कर भूमि को साफ सुथरा कर दें।
2. पिछली फसल के लिए बनाए गए खत्तौ एवं बैड़ों को पलटू हल या चिजलर या सिंगल ब्लेड हल जिसे हम तोता हल या सुआ के प्रयोग से खेत की गहरी जुताई करना आवश्यक है। तीन से चार गहरी जुताई दोनों दिशाओं में करने से अधिक लाभ होता है।
3. भूमि को सुहागा लगाकर समतल बनाने के बाद उसके ऊपर ड्रिप लाइन सिंचाई के लिए 2 से 3 मीटर की आपसी दूरी पर बिछा दें।
4. मच्छरदानी/ पॉली हाउस/ प्लास्टिक की सुरंग की भूमि को किसी पारदर्शी प्लास्टिक की पन्नी के साथ ढंक दें। जिसमें से सूर्य की रोशनी आसानी से आर पार होकर भूमि तक पहुंच सके और उसके तापमान को बढ़ा दे।
5. अधिक तापमान से ड्रिप विधि द्वारा दिया गया पानी भाप का रूप धारण कर लेता है, जोकि गहरी जुताई वाली भूमि को अपने ताप से जड़ों के सूत्र कर्मी रोग के कणों को निष्क्रिय देता है। जिससे सूत्र कर्मी रोग के कीटाणु फसल की अवधि के दौरान पनपने से पहले ही नष्ट हो जाते हैं।
6. प्लास्टिक के संयंत्र को पूरी तरह से चारों दिशाओं में प्लास्टिक की पन्नी के साथ 60 दिन के लिए ढंक देना चाहिए। ताकि हवा अंदर क्रॉस ना हो सके। जिससे कि अंदर का तापमान बढ़कर 60 से 70 डिग्री सेल्सियस हो जाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27.5.21	3	1-5

सुविधा | ई-मौसम सेवा के तहत प्रदेश के साढ़े तीन लाख किसानों को एनआइसी के सहयोग से प्रेषित की जाती है मौसम की सलाह

खेती का नुकसान घटाया, लोगों के डे-प्लान को दी दिशा

जागरण संवाददाता, हिसार : कहते हैं कि खेती सबसे जोखिम का काम है, जरा सा मौसम कम या ज्यादा हुआ तो भारी नुकसान कर देता है। इसी नुकसान को कम करने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 11 वर्ष पहले ई-मौसम की शुरुआत हुई थी। खास बात है कि यह सेवा अब लोगों का डे-प्लान भी सेट कर रही है, उन्हें किचन गार्डन की जानकारी दे रही है, घर को हरित बनाने के टिप्स दे रही है। इस सेवा की सहायता से मौसम और पौधों की जानकारी हासिल कर लोग अपने फैसले लेते हैं। मौसम लोगों के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। ई-मौसम में एसएमएस सेवा व मोबाइल एप दोनों सेवाएं शामिल हैं। ई मौसम हरियाणा की बेवसाइट और मोबाइल एप पर जाकर कोई भी यह जानकारी ले सकता है।

प्रदेश के 6600 गांवों के साढ़े तीन लाख लोग जुड़े

कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खिचड़ बताते हैं कि अब राज्य के 6600 गांवों में साढ़े तीन लाख से अधिक किसानों तक र रोज मौसम की जानकारी विश्वविद्यालय उपलब्ध करा रहा है। यह जानकारी एसएमएस के जरिए नेशनल इन्फोर्मेशन सेंटर के जरिए किसानों तक पहुंचाई जाती है। इस जानकारी की बदौलत किसान अपने रोजाना के कृषि कार्य मौसम अनुसार कर उत्पादन बढ़ाकर नुकसान को कम कर रहे हैं। इसी सेवा के लाभ को देखते हुए भारत सरकार भारत मौसम विभाग ने एम-किसान सेवा देश के सभी राज्यों के लिए शुरू की।

मौसम ही नहीं खेती भी सिखा रहा ई-मौसम

किसान खेत को तैयार करने से लेकर फसल की बिजाई, सिंचाई, स्प्रे, खाद का प्रयोग, कटाई, कढ़ाई का काम भी इसी सेवा का लाभ लेकर कर रहे हैं। ई-मौसम सेवा का उद्देश्य है कि किसान मौसम आधारित कृषि पद्धति अपनाएं। ई-मौसम पर सभी फसलों की जानकारी दी जाती है। मोबाइल एप के जरिए भी किसानों को जोड़ा गया है।

तीन दिन में अपडेट होती है जानकारी

किसानों को मौसम की समय-समय से जानकारी उपलब्ध कराने को लगातार संपर्क में रहना जरूरी है। ऐसे में तीन से चार दिन बाद लगातार मौसम अपडेट दी जाती है। मौसम में कोई बड़ा बदलाव होता है तो किसानों को तीन से चार दिन पहले ही सतर्क कर दिया जाता है। उन्हें यह भी बताया जाता है कि वह इस मौसम में अपनी खेती के रोजाना के कार्यों में क्या बदलाव करें। मोबाइल पर संदेश आते ही किसान उसी आधार पर काम शुरू कर देते हैं। जैसे बारिश आनी तो बिजाई, स्प्रे टाई, कढ़ाई आदि रोक दिया जाता है।

एप से यह मिल रहा लाभ

2017 में मोबाइल एप ई-मौसम एचएयू का शुभारंभ किया था। एप पर 60 हजार से अधिक लोग जुड़े हैं॥ एप में मौसम पूर्वानुमान के साथ फसलों, सब्जियों व फलों की खेती की पूरी जानकारी भी उपलब्ध है। इसमें साप्ताहिक कृषि मौसम सलाह, विज्ञानियों व कृषि अधिकारियों के मोबाइल नंबर भी उपलब्ध हैं। साथ ही फेसबुक पेज ई-मौसम एचएयू व वाटसएप पर भी सेवाएं दी जा रही हैं।